साहित्य अकादेमी
द्वारा आयोजित

लेखक से भेंट

11 जनवरी 1994

रामविलास शर्मा

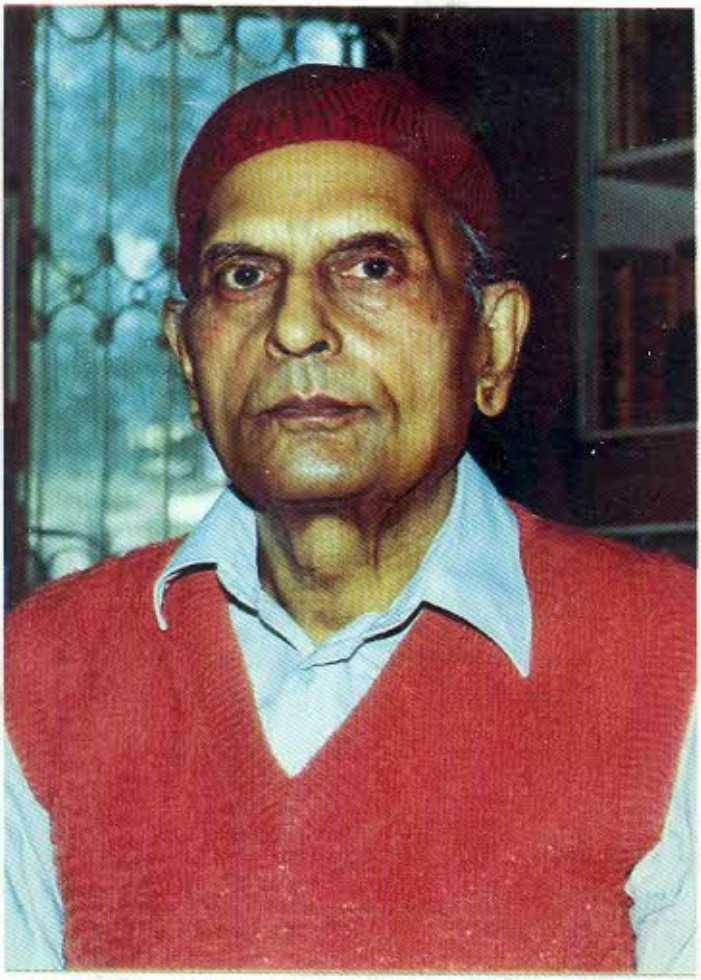

रामविलास शर्मा

कालजयी व्यक्तित्व

डॉ. रामविलास शर्मा का जन्म ऊँचगाव-सानी (ज़िला उन्नाव, उ.प्र.) में 10 अक्टूबर 1912 को हुआ। आपने 1934 में अंग्रेज़ी साहित्य में लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। 1938 में पी-एच.डी. करने के बाद वहीं अंग्रेज़ी में अध्यापन किया। उसके बाद बलवन्त राजपूत कालेज, आगरा में 1943 से 1971 तक अंग्रेज़ी विभाग के अध्यक्ष रहे और बाद में के.एम. मुंशी हिन्दी विद्यापीठ, आगरा के निदेशक पद पर कार्यरत रहे।

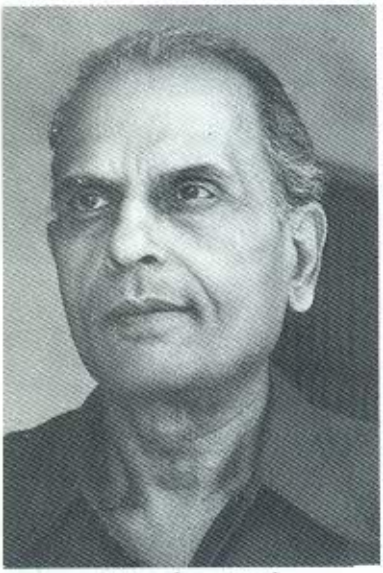

डॉ. रामविलास शर्मा

डॉ. शर्मा के लेखन की शुरूआत कविता के साथ हुई थी। वर्ष 1934 में 'चाँद' के लिए आलोचनात्मक लेख लिखने वाली उनकी कालजयी लेखनी साठ सालों से भी अधिक समय से सक्रिय बनी हुई है। 'तारसप्तक' (1944) में संकलित कविताओं के अलावा उनका 'रूपतरंग' काव्य-संग्रह प्रकाशित है। अपने प्रारंभिक रचना-काल में उन्होंने 'चार दिन' (उपन्यास) और 'पाप के पुजारी' नाटक का भी प्रणयन किया, जो अब इतने वर्षों बाद पुनः प्रकाशित हो रहे हैं।

डॉ. शर्मा 1949 से 1953 तक अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव रहे और दो वर्षों तक (1958-59) 'समालोचक' पत्रिका का सम्पादन भी किया। उन्हें वर्ष 1970 में 'निराला की साहित्य साधना' ग्रंथ के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

प्रथम **व्यास सम्मान** (के.के. बिड़ला फाउंडेशन), **भारत भारती सम्मान** (उ.प्र. राज्य साहित्य सम्मान) और **शलाका सम्मान** (हिन्दी अकादेमी, दिल्ली) आदि विभिन्न सम्मानों एवं पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. शर्मा ने इन पुरस्कारों/सम्मानों से जुड़ी राशि को सिद्धान्ततः कभी स्वीकार नहीं किया।

वाराणसी में अपनी पोती के आवास पर अध्ययनरत, वर्ष 1987

भारतीय साहित्य के व्याख्याता

डॉ. रामविलास शर्मा हिन्दी साहित्य के ही नहीं, सम्पूर्ण भारतीय साहित्य की व्याख्या के लिए महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट सम्मान के अधिकारी हैं। उनके यशस्वी, असाधारण और तप:पूत व्यक्तित्व के कई आयाम हैं, जो एक-दूसरे के पूरक हैं। कवि, लेखक, प्राध्यापक एवं आलोचक के रूप में उनका कृती व्यक्तित्व साहित्य और लोक को समर्पित साधना, अजेय संकल्प और अदम्य संघर्ष का ही नामान्तर है।

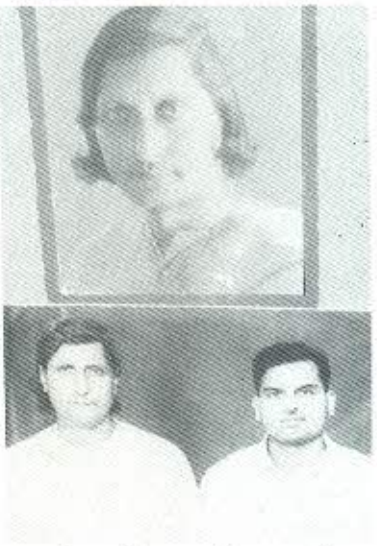

निराला के साथ रामविलास शर्मा
फाइन आर्ट स्टूडियो, आगरा में, वर्ष 1946

भारत में मार्क्सवादी चिन्तन परम्परा और समालोचना के समर्थ प्रवक्ता डॉ. शर्मा भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की चर्चा करते हुए अतीत का बखान या गौरव का गुणगान ही करते नहीं रह जाते बल्कि अपनी तर्कसम्मत व्याख्या और तथ्याश्रित इतिहास-दृष्टि से यह बताते रहे हैं कि साहित्य की यात्रा में हम कहाँ-कहाँ किन प्रश्नों और प्रस्थानों से कतराते रहे और हमसे कहाँ और कब चूक हुई। उन्होंने जहाँ कबीर, तुलसी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रेमचन्द और निराला के माध्यम से हिन्दी के जातीय साहित्य का मूल्यांकन किया, वहीं अन्धपरम्परा और रूढ़ियों के बंधन को नकार कर एक स्वस्थ, उदार और निरपेक्ष दृष्टि से इसे पढ़ने की दृष्टि प्रदान की। यह ठीक है कि डॉ. शर्मा ने अपनी आलोचना के उपस्कर मार्क्सवाद से प्राप्त किये। लेकिन उनके प्रश्न, प्रसंग और प्रस्थान और प्रतिमान भारतीय परिवेश और संदर्भों से पुष्ट और समृद्ध हैं। यही कारण है कि उन्हें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद हिन्दी के शीर्षस्थ समालोचक का सम्मान प्राप्त है। उनकी लेखनी वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, कबीर, तुलसीदास, भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द, निराला, मुक्तिबोध, राहुल सांकृत्यायन, केदार-नागार्जुन-त्रिलोचन और अमृतलाल नागर—जैसे विशिष्ट रचनाकारों एवं साहित्य सेवियों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन कर चुकी है। उनकी भारतीय साहित्य और हिन्दी जाति के साहित्य की सही और समुचित अवधारणाओं ने साहित्येतिहास लेखन को एक नया प्रस्थान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किया है।

परम्परा का ऐतिहासिक मूल्यांकन

भारतीय परम्परा के मूल्यांकन के प्रतीक पुरुष डॉ. रामविलास शर्मा अब स्वयं एक जीवित परम्परा बन गये हैं। उन्होंने हिन्दी महाजातीय परम्परा और जातीय भाषा हिन्दी का सुसंगत और वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन किया है—यह अपने आप में एक नयी साहित्य-दृष्टि और उपलब्धि है। इसे वे उदार समाजवादी प्रणाली से परिपुष्ट करते हैं। उनके अनुसार, *''संसार का कोई भी देश बहुजातीय राष्ट्र की हैसियत से, भारत का मुकाबला नहीं कर सकता। यहाँ राष्ट्रीयता एक जाति द्वारा दूसरी जातियों पर राजनीतिक प्रभुत्व कायम करके स्थापित नहीं हुई। वह मुख्यत: संस्कृति और इतिहास की देन है। इस संस्कृति के निर्माण में इस देश के कवियों का सर्वोच्च स्थान है। इस देश की संस्कृति से रामायण और महाभारत को अलग कर दें तो भारतीय साहित्य की आंतरिक एकता टूट जायेगी। किसी भी बहुजातीय राष्ट्र के सामाजिक विकास में कवियों की ऐसी निर्णायक भूमिका नहीं रही, जैसी इस देश में व्यास और वाल्मीकि की है। इसलिए किसी भी देश के लिए साहित्य की परम्परा का मूल्यांकन उतना महत्त्वपूर्ण नहीं, जितना इस देश के लिए है।''*

रामविलास शर्मा अपनी धर्मपत्नी के साथ

जातीय आस्था और अस्मिता

जातीय अस्मिता और मार्क्सवादी चेतना रामविलास जी के चिन्तन के आधार बिन्दु हैं। उन्होंने हिन्दी आलोचना को कलावाद की अँधेरी खाई से निकालकर यथार्थवादी चिन्तन का सुदृढ़ आधार प्रदान किया। मार्क्सवादी समीक्षा और सौन्दर्यशास्त्र को व्यापक स्वीकृति दिलाने तथा साहित्य को जातीय आस्था और अस्मिता से जोड़कर इन्हें न केवल धरोहर के रूप में, बल्कि सामाजिक सरोकार के रूप में देखने-परखने का आग्रह उनकी समालोचना की अनिवार्य कसौटी है। मार्क्सवादी प्रतिमानों एवं अवधारणाओं के गहरे अध्येता डॉ. शर्मा प्रसंगानुरूप मार्क्स-एंगेल्स की मान्यताओं एवं निष्कर्षों को जहाँ रेखांकित करते हैं वहाँ उन

रामविलास शर्मा परिवारजन के संग

का नि:संकोच खण्डन भी करते हैं और निरंतर विकसित होनेवाली मेधा के अनुरूप वे अपनी मान्यताओं में अपेक्षित संशोधन करने में तनिक भी विलम्ब नहीं करते। उनकी यह दृष्टि हमें अपने जातीय इतिहास को उसकी समग्रता और विकासमानता में देखने को प्रेरित करती रही है। साहित्य, भाषा, भाषा-विज्ञान, परम्परा, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजविज्ञान तथा मार्क्सवाद की जटिलताओं को समझाते हुए 'विज्ञानों के विज्ञान' की सर्जनात्मक एवं सकारात्मक व्याख्या के साथ राष्ट्रीय महत्त्व के प्रश्नों के उत्तर और समस्याओं के मौलिक समाधान के लिए भी उनकी समकालीन और परवर्ती पीढ़ियाँ बड़ी अपेक्षा और आतुरता से उनकी ओर देखती रही हैं। हिन्दी के सुपरिचित समालोचक डॉ. नामवर सिंह के शब्दों में, *''यह हिन्दी के लिए गौरव की बात है कि हिन्दी के क्षेत्र में, अखिल भारतीय प्रगतिशील आन्दोलन में एक साहित्यकार समालोचक ऐसा है, जो भारतीय इतिहास और भारतीय समाज के विकास और परिवर्तनों के बारे में मौलिक चिन्तन कर रहा है। डॉ. शर्मा का यह मौलिक चिन्तन किसी भी शोधकर्ता एवं मार्क्सवादी आधुनिक इतिहासकार के लिए चुनौती है, महत्त्वपूर्ण संवाद है।''*

कविवर केदारनाथ अग्रवाल के साथ रामविलास शर्मा : अंतरंग क्षणों में

डॉ. रामविलास शर्मा

रचनाएँ

प्रेमचन्द 1941, सरस्वती प्रेस, वाराणसी, (परवर्ती संस्करण, राधाकृष्ण, 1994)
भारतेन्दु युग 1942, पुस्तक मन्दिर, उन्नाव, (परवर्ती संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
तार सप्तक (संकलित कवि) 1994, दिल्ली
निराला 1947, जन प्रकाशन गृह, बम्बई
प्रेमचन्द और उनका युग 1952, मेहरचंद मुंशीराम
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 1953, विद्या धाम, दिल्ली, (पर. सं. 1966)
प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ 1955, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा (परवर्ती सं., राजकमल, दिल्ली)
भाषा साहित्य और संस्कृति 1954, किताब महल, इलाहाबाद (परवर्ती सं., वाणी, दिल्ली)
प्रगति और परम्परा 1953, किताब महल, इलाहाबाद
मानव सभ्यता का विकास 1956, उपरिवत, (परवर्ती सं., वाणी)
रूप तरंग 1956, उपरिवत, (कविता संकलन)
1857 की राज्य क्रान्ति 1957, विनोद पुस्तक मन्दिर (परवर्ती सं. लोकभारती)
आस्था और सौन्दर्य 1960, पीपुल्स पब्लि. हाउस, दिल्ली
भाषा और समाज 1961, पीपुल्स पब्लि. हाउस, दिल्ली
राष्ट्रभाषा की समस्या 1965, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली
निराला की साहित्य साधना (तीन खण्डों में) 1969-76, राजकमल
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना 1973, राजकमल
नयी कविता और अस्तित्ववाद 1973, राजकमल
महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण 1977, राजकमल
आर्य और द्रविड़ भाषा परिवारों का सम्बंध 1979, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी (तीन खण्डों में), 1979, राजकमल
भारत की भाषा-समस्या 1978, राजकमल
भारत में अंग्रेज़ी राज और मार्क्सवाद (दो खण्डों में), 1982, राजकमल
भाषा, युगबोध और कविता 1981, वाणी
घर की बात (पारिवारिक लेखन) 1983, राजकमल
मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य 1984, वाणी
विराम चिह्न विनोद पुस्तक मन्दिर, (परवर्ती सं., वाणी 1985)
मार्क्स और पिछड़े हुए समाज 1986, राजकमल
बड़े भाई 1986, वाणी
हिन्दी जाति का साहित्य 1986, राजपाल, दिल्ली
मार्क्स, त्रोत्स्की और एशियाई समाज 1986, लोकभारती
प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल 1992, परिमल, इलाहाबाद
सदियों के सोये जाग उठे 1988, वाणी
रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि 1990, वाणी
आज की दुनिया और लेनिन, 1992, अनामिका प्रकाशन
मित्र संवाद : (केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा का पत्राचार) 1992, परिमल प्रकाशन
भारतीय इतिहास पर चार ग्रंथ (दिल्ली विश्वविद्यालय हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय)
- **भारतीय इतिहास और ऐतिहासिक भौतिकवाद** 1992
- **स्वाधीनता संग्राम : बदलते परिप्रेक्ष्य** 1992
- **भारतीय नवजागरण और योरोप** (प्रकाशनाधीन)
- **पश्चिम एशिया और ऋग्वेद** (प्रकाशनाधीन)

मेरे साक्षात्कार 1994, किताबघर
भारतीय साहित्य की भूमिका राजकमल (प्रकाश्य)
इतिहास-दर्शन वाणी, प्रकाश्य
पत्र-संग्रह (तीन खण्डों में : पूर्ववर्ती पीढ़ी समकालीन पीढ़ी और व्यक्तिगत) वाणी (प्रकाश्य)